DR. SUMAN LAL RAY
Assistant Professor
(Guest faculty)
Deptt. of Sanskrit
SRAP College, Bara
Chakia, BRABU-
Muz. pur.

B.A. (Hon.) part — II
Subject — Sanskrit
Paper — IV

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (प्रथमोऽङ्कः)

श्लोकों का अन्वय सहित हिन्दी-अनुवाद

16

श्लोकः

शान्तमिदमाश्रमपदं स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य ।
अथवा भवितव्यतानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र ॥
(अभिज्ञान० 1/16)

अन्वयः

इदम् आश्रमपदं शान्तं, बाहुश्च स्फुरति, इह अस्य फलं कुतः, अथवा भवितव्यतानां द्वाराणि सर्वत्र भवन्ति ।

अनुवाद

यह आश्रम तो शान्त स्थान है, परन्तु मेरी दाहिनी भुजा फड़क रही है, भला इस तपोवन में इस शुभ शकुन का फल कैसे सम्भव हो सकता है? अथवा हो भी सकता है, भावी के द्वार सर्वत्र हैं।

———— o ————